Chapter- 5

गूदड़ साई

STUDY NOTES

MIND MAP

पाठ प्रवेश

बच्चे भगवान का स्वरूप होता है । उनके साथ खेलना ,हँसना ,सबको अच्छा लगता है । भगवान के रूप को सिर्फ बच्चों में देखा जा सकता है । वास्तव में बच्चों से ही जीवन सुखमय होता है। यह एक सुप्रसिद्ध बाल मनोबैज्ञानिक कहानी है । इसमे गरीब साई में दुनिया देखता है ,उसके अनुसारे बच्चे भगवान के स्वरूप होते हैं । उनके साथ खेलना, हसना, मस्ती करना आदि सबको अच्छा लगता है । भगवान के रूप को सिर्फ बच्चों में देखा जा सकता है । सही अर्थ में बच्चों में जीवन सुखमय हो जाता है ।

ODM EDUCATIONAL GROUP Changing your Tomorrow

पाठ का सारांश

एक लड़के ने साई को पुकारा। साईं घूम पड़ा। उसने देखा कि एक 8 वर्ष का बालक उसे पुकार रहा है।

साईं वैरागी था,-माया नहीं, मोह नहीं। परन्तु कुछ दिनों से उसकी आदत पड़ गयी थी कि दोपहर को मोहन के घर जाना,

अपने दो-तीन गन्दे गूदड़ यत्न से रख कर उन्हीं पर बैठ जाता और मोहन से बातें करता। जब कभी मोहन उसे गरीब और भिखमंगा जानकर माँ से अभिमान करके पिता की नजर बचाकर कुछ साग-रोटी लाकर दे देता,

एक दिन मोहन के पिता ने देख लिया। वह बहुत बिगड़े। वह थे कट्टर आर्यसमाजी, 'ढोंगी फकीरों पर उनकी साधारण और स्वाभाविक चिढ़ थी।' मोहन को डाँटा कि वह इन लोगों के साथ बातें न किया करे। साईं हँस पड़ा, चला गया।

उसके बाद आज कई दिन पर साईं आया और वह जान-बूझकर उस बालक के मकान की ओर नहीं गया; परन्तु पढक़र लौटते हुए मोहन ने उसे देखकर पुकारा और वह लौट भी आया।मोहन ने उसे कहा तुम आजकल क्यों नहीं आते । साई ने कहा तुम्हारे पिताजी तुम्हें डांटते है । फिर मोहन ने कहा क्या तुम्हें भूख नहीं लगती । हमेशा तुम आकर रोती ले जाया करो । उसी दौरान दूसरा लडक़ा साईं का गूदड़ खींचकर भागा। गूदड़ लेने के लिए साईं उस लड़के के पीछे दौड़ा। मोहन खड़ा देखता रहा, साईं आँखों से ओझल हो गया।

दौड़ते-दौड़ते साईं को ठोकर लगी, वह गिर पड़ा। सिर से खून बहने लगा। दूसरी ओर से मोहन के पिता ने उसे पकड़ लिया, दूसरे हाथ से साईं को पकड़ कर उठाया।

"मत मारो, मत मारो, चोट आती होगी!" साईं ने कहा-और लड़के को छुड़ाने लगा! मोहन के पिता ने साईं से पूछा-"तब चीथड़े के लिए दौड़ते क्यों थे?"

उसने कहा-"बाबा, मेरे पास, दूसरी कौन वस्तु है, जिसे देकर इन 'रामरूप' भगवान को प्रसन्न करता!"

"तो क्या तुम इसीलिए गूदड़ रखते हो?"

"इस चीथड़े को लेकर भागते हैं भगवान् और मैं उनसे लड़कर छीन लेता हूँ; रखता हूँ फिर उन्हीं से छिनवाने के लिए, उनके मनोविनोद के लिए। सोने का खिलौना तो उचक्के भी छीनते हैं, पर चीथड़ों पर भगवान् ही दया करते हैं!" इतना कहकर बालक का मुँह पोंछते हुए मित्र के समान गलबाँही डाले हुए साईं चला गया। मोहन के पिता आश्चर्य से बोले-"गूदड़ साईं! तुम निरे गूदड़ नहीं; गुदड़ी के लाल हो!!'

****